Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri

Tq: Phulambri Dist : Aurangabad – 431111, (MS), India

AARHAT PUBLICATION & AARHAT JOURNAL'S
108, Gokuldham Park, Dr. Ambedkar Chowk, Near T.V. Tower, Badlapur (E)-421503.
Email ID: aarhatpublication@gmail.com • Phone: 8822307164
Website: www.aarhat.com

Mitra Sadhana Shikshan Prasarak Mandal's

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri

Tq: Phulambri Dist : Aurangabad – 431111, (MS), India

One Day National Level Conference

On

"वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा, साहित्य तथा संस्कृति"

2nd February 2019

Organized by

Department of Hindi

Rajarshi Shahu Arts, Commerce and Science College Pathri

Tq: Phulambri Dist : Aurangabad – 431111, (MS), India

Executive Editor

Principal, Dr. S. B. Jadhav

Chief Editor

Dr. D. N. Phuke

Co - Editor

Mr. B. T. Shelke

19	प्रा. डॉ. उत्तम जाधव	विश्वपटल पर हिंदी की स्थिति	68 - 71
20	डॉ. दत्तात्रय येडले	हिंदी उपन्यास गोदान में व्यक्त किसान विमर्ष	72 - 74
21	डॉ. बालाजी जोकरे	वैश्वीकरण में हिंदी	75 - 78
22	प्रा. डॉ. सुरेखा प्रे. मंत्री	वैश्विकरण का अर्थ और विशेषताएँ	79 - 82
23	सुनंदा तुकाराम सालवे	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा, साहित्य और संस्कृति का अंतराष्ट्रीय स्वरूप	83 - 84
24	डॉ. दत्ता शिवराम साकोळे	वैश्वीकरण और हिंदी कहानी	85 - 88
25	डॉ. गोविंद बुरसे	हिंदी भाषा और साहित्य का वैश्वीकरण : कुछ पहलू	89 - 91
26	कु. पल्लवी अंकुशराव शेळके	वर्तमान हिंदी उपन्यासों में नारी की समस्या	92 - 93
27	संतोष नागरे डॉ. रजनी शिखरे	वैश्वीकरण : साहित्य, समाज और संस्कृति	94 - 99
28	डॉ. यशवंते एस. जे.	वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में महिलाओं की वर्तमान स्थिति : कानून के संदर्भ मे	100 - 102
29	डॉ. के. वी. कृष्णमोहन	ममता कालिया कृत दौड़ में "वैश्वीकरण" : एक अध्ययन	103 - 104
30	सौ. सुरेखा एस. लक्कस	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी भाषा	105 - 109
31	डॉ. राऊत शारदा	साहित्य में स्त्री की प्रतिमा	110 - 115
32	सहा. प्रा. तोंडाकुर लक्ष्मण पोतन्ना	हिंदी और मराठी उपन्यास : भूमंडलीकरण बनाम आदिवासी संकट	116 - 120
33	प्रा. श्रीमती पोटकुले हिरा	नासिरा शर्मा का साहित्य और वैश्वीकरण	121 - 123
34	डॉ. सिंधू हालदे (रेड्डी)	सुमित्रानंदन पंत के काव्य में 'स्त्री' : पुनर्मूल्यांकन	124 - 127
35	प्रा. आर. व्ही पोपळघट	वैश्वीकरण, संचार माध्यम और हिन्दी भाषा	128 - 130
36	प्रा. डॉ. काकडे परमेश्वर जिजाराव	सूचना प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा	131 - 133
37	प्रा. तुकाराम पाराजी गावंडे	हंदी में दलित साहित्य	134 - 137

नासिरा शर्मा का साहित्य और वैश्वीकरण

प्रा. श्रीमती पोटकुले हिरा

कला व विज्ञान महाविद्यालय,

शिवाजीनगर गढी. गेवराई, बीड

नासिरा शर्मा ने अपने कथा–साहित्य में अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं से उत्पन्न होने वाली राष्ट्रीयता के ऐसे प्रश्नों को उठाया है,जहॉं राष्ट्रीयता मानवीय संबंधों के आडे आ जाती है। राजनीती की क्रूरता को उद्घाटीत करके मानवतावाद की संवेदना उत्पन्न करती है। उन्होंने किसी ऐसे समस्या को उठाया हैं जिसका संबंध पात्र के स्थानीय परिवेश के साथ लगाव हो। लेखिका ने विभाजन से उत्पन्न समस्याओं को संवेदनात्मक धरातल पर प्रस्तुत किया है। ईरानी क्रांती और भारत– पाकिस्तान विभाजन के साथ–साथ युगांडा,इथोपिया,फिलिस्तीन,अफगाणिस्तान,कश्मीर,सिरिया,बांगलादेश,कनाडा और टर्की की घटनाओं को पात्रों के माध्यम से वहॉं की समस्याओं को चित्रित किया है। लेखिका ने विदेशयात्रा के बाद साहित्य सृजन किया है। लेखिका ने साहित्य में मुस्लिम समाज पर ध्यान केंद्रित करने के बावजूद भी उनके साहित्य की प्रवृत्ति अन्तर्राष्ट्रीय है।

नासिरा शर्मा की 'सात नदियॉं एक समन्दर'ऐसी कृति है जिसका संबंध इरान के शाह को अपदस्थ करने के पश्चात इमाम खुमैनी के काल की परिस्थितियों से है। निश्चित ही राष्ट्रीय परिधि को लांघकर उन्होंने इस उपन्यास के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय जगत में प्रवेश किया है। लेखिका ने इस उपन्यास में इरानी क्रांति के दौरान इमाम खुमैनी के शासनकाल में महिलाओं पर हूए अत्याचारों का जीवंत वर्णन किया है। इस उपन्यास में सात नदियों का प्रतिक सात सहेलियॉं है–मलीहा,सूसन,परी,अख्तर,सनोवर,तय्यबा,महनाजा इन युवतियों का जीवंत चित्र इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। शाह को अपदस्थ करके इमाम खुमैनी धर्मरक्ष के रूप में इरान की सत्ता पर आये, जो वादे उन्होंने किये थे उन्हें भूलाकर जो अत्यचार शुरू किये उसके कारण स्त्रियों की स्थिति बद से बदत्तर हो गई साथ ही पत्रकार ,लेखक,कवि तथा बुध्दिजीवियों की स्थिति भी बिकट हो गई। शाह के समय स्त्रियों को जो आजादी घूमने–फिरने,शिक्षा के क्षेत्र में थी वह सब समाप्त हो गई और स्त्रियॉं पुनः घर में कैद हो गई। इन सातों युवतियों के जीवन की दुःखद घटनाओं के माध्यम से तत्कालीन सामाजिक,राजनीतिक,आर्थिक परिस्थिति और इमाम खुमैनी के खूँखार व्यक्तित्व एवं मानसिकता से उत्पन्न विपरित परिस्थिती और समस्याओं को इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। लेखिका ने इस उपन्यास के माध्यम से सबके सामने प्रश्न प्रस्तुत किया है कि अपने राजनीतिक स्वार्थो के लिए सारी जनता को इराक के विरूध्द युध्द में झोंक देना कहॉं की मानवता है?

'जिन्दा मुहावरे' उपन्यास को भारत–पाक विभाजन की त्रासदी को आधार बनाकर भारत–पाक की स्थिति, पारिवारीक विघटन,मानवीय संवेदनाओं और राजनीतिक स्थितियों को चित्रित किया है। वास्तव में सांप्रदायिकता के नाम पर जो अंधा खेल राजनीतिज्ञों द्वारा खेला जाता है उसका चित्रण है। भाषा जब मृत होकर व्यवहार में नहीं आती तो उसके मुहावरे दुसरी भाषा में जाकर प्रयुक्त होने लगते है। परन्तु वे दूसरी भाषा में जाकर अपनी मुल भाषा की पृष्ठभूमि को नहीं छोंड पाते उसी प्रकार भारत–पाक बॅंटवारे के समय भारत को छोड पाक जाने और पाक से भारत आनेवाले लोग भी उन्हीं जिन्दा मुहावरों के समान है जो

लाख कोशिश करने पर भी अपनी मातृभूमि और परिवारजनों के प्रेम को भुला नहीं पाते। उन लोगों की तडप और छटपटाहट को लेखिका ने मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है।

इस उपन्यास का नायक निजाम जो उत्तर प्रदेश के फैजाबाद नाम के छोटे गॉव का निवासी है भारत–पाक विभाजन के दौरान इस धार्मिक उन्माद में मुस्लिम के लिए माता–पिता, भाई–भाभी, खेती–घर, रिश्तेदारों को छोड पाकिस्तान ही अपना देश है मानकर पाकिस्तान चला जाता है। 45 वर्ष पाकिस्तान रहने के बावजूद भी वो अपनी मूल मातृभूमि और परिवारजनों को नहीं भूल पाता। एक सम्पन्न व्यापारी के रूप में पत्नी सबीहा के साथ भारत पहॅुचाता है। अपने परिवारजनों को मिलकर अपनों के बीच आत्मीयता से भावविभोर हो जाता है। पाकिस्तान जाने के निर्णय पर वो पश्चाताप करता है और यही रूकना चाहता है और कहता है कि '' ये दूरियॉ यह लापरवाही कैसे एक खून के रिश्ते में जन्म ले बैठी? क्या हो गया था,तब उसे कौनसी दिवानगी का दौरा पडा था?अक्ल क्यों गुम हो गयी थी?ऐसा सुख उसे एक हजार गजवाली कोठी में भी नसीब नहीं हुआ। यहॉ से जाकर क्या करेगा,यही रूक जाता हूॅ,इसी घर इसी मिट्टी में। निजाम की ऑखे गीली होने लगी।''1 साथ ही यही पीडा,यही परिस्थिति निजाम की पत्नी सबीहा की भी है। वास्तव में यह पीडा,दर्द किसी एक व्यक्ति,एक कौम की नहीं है बल्कि समूची इंसानियत की है। यह पीडा केवल भारत–पाक विभाजन के दौरान सफर हुए लोगों की नहीं है बल्कि हर देश में पल रहे निर्वासितों की है। अतः स्पष्ट है कि राजनैतिक स्वार्थ के कारण धरती का चाहे बॅटवारा भी क्यों न हो जाए इंसानी रिश्ते नही बॅटते।

लेखिका ने अपनी कहानियों में जिंदगी का मर्म,इंसानियत का चित्रण है। उनकी कहानियॉ जाति,वर्ग, धर्म–मजहब,वर्ण,देश की संकीर्णताओं से बहूत परे है। उनके साहित्य में मानवतावादी दृष्टि स्पष्ट रूप दिखाई देती है। वैश्वीकरण की जब आती है तो 'इब्ने–मरियम' कहानी संग्रह का उल्लेख करना आवश्यक है। इन कहानियों विभिन्न परिस्थितियों में जीनेवाले पात्र अलग–अलग देशों से है परंतु उनकी पीडा इनसानियत की पीडा है। इन कहानियों को पढने से पता चलता है की सरहदों की बंदिशों,दीन,धर्म,ईमान,इंसाफ और अमन के नाम पर सदियों से चलाई जा रही ये जंगे आदमी के घर–परिवार पहचान और संवेदनाओं को भी खत्म कर रही है। लेखिका ने अपने कथा साहित्य में विभिन्न देशों के प्रदेश परिवेश को अपने पात्रों के माध्यम से चित्रित किया है– आमोख्ता (पंजाब) जडे (युगांडा), जैतून के साये (फिलिस्तीन), काला सूरज (इथिपोपिया), कागजी बादाम (अफगाणिस्तान), तीसरा मोचा (कश्मीर),मोमजामा(सिरिया),मिस्टरब्राउनी(स्काटलैंड),काशीदाकारी(बांग्लादेश),जुलजुता(कनाडा),पुल–ए–सरत (इराक),जहॉनुमा(टर्कि),इब्ने मरियम(भोपाल) इन सरी कहानियों में लेखिका ने संवेदना के साथ मानवीयता को प्रस्तुत किया।

'अमोख्ता' पंजाब आतंकवाद पर केंद्रित कहानी है जिसका नायक सियासत के घिनौने चेहरे से हताश एवं मायुस है। अमोख्ता कहानी का नायक वीरजी विभाजन की त्रासदी का शिकार होकर लाहोर से अमृतसर आता है। यहॉ पर उसे एक– के बाद एक दुखद घटना घटती है। सुख और श्शांती की तमन्ना लिए अमृतसर आये नायक को हर समय दुख,दर्द का सामना करना पडता है। बीस साल बाद वीरजी अपने पुराने घर को देखने की इच्छा से लाहोर जाता है वहॉ की परिस्थिति,परिदृश्य देखकर तय करता है कि अब भारत ही उसका देश है परंतु अमृतसर के दंगों में अपने परिवार को खोकर आहत हो उठता है। अंत

में उसके मन में असुरक्षा के भाव उत्पन्न होते है और विवश होकर अपने पोते को विदेश भेजने का निर्णय लेता है। नायक वीरजी के मन की पीडा,आक्रोश इस प्रकार कहानी में व्यक्त है–'' मै मुसलमान नहीं हूँ,सिख नहीं हूँ,ईसाई,जैन,बौध्द नहीं हूँ मै एक हिन्दू हूँ। मैं एक हिन्दू होकर तुमसे पूछता हूँ कि मैं हिन्दू होकर क्यों दो बार अपने ही मुल्क में उजडा?''2

'काला सूरज' कहानी में लेखिका ने राहब मोहासा के माध्यम से इथोपिया के परिवेश,विपरित परिस्थिति,अनेकानेक समस्याओं से ग्रस्त,दुर्भिक्ष पीडीत जनता की पीडा का जीवंत चित्रण किया है। भूख जैसी बडी समस्या के कारण एक मॉ अपने एक मात्र जीवीत छह मास के बच्चे को नहीं बचा पाती और विक्षिप्त हो जाती है। 'कशीदाकारी' कहानी में भारत–बांग्लादेश के मछुआरों के माध्यम से लेखिका यह कहती है कि राजनैतिक स्वार्थों के कारण, सिंयासी निर्णयों से धरती चाहे बॅट जाये परन्तु इंसानी रिश्ते, लोगों के दिलों को नहीं बॉट पाते–'' नदी के उठते उफान की भाषा एक है,जिसके अंदर असीम रिश्तों की पैठ इतनी गहरी है की उन्हे इस बंधन से मुक्त कराना है आसान नहीं है। मगर धरती पर सरहदों की कशदाकारी करने वाले इस सच से किस कदर बेखबर है।''3

नासिरा शर्मा ने अपने साहित्य में मुस्लिम समाज के परिवार,परिवेश,परिस्थितियॉ,समस्याओं का ज्यादातर चित्रण किया है। भारत की मुस्लिम स्त्रियों की समस्याओं का चित्रण किया है जो अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनेक इस्लामिक देशों के साथ जुड जाती है। लेखिका ने मुस्लिम स्त्री की पीडा,दर्द,समस्याओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनो स्तरों पर चित्रित किया है। वर्तमान समय में अंतर्जातीय विवाह के साथ–साथ अंतधर्मीय विवाह की समस्या ने भी गंभीर रूप धारण किया है। नासिरा शर्मा मुस्लिम होते हूए भी एक हिंदू पुरूष के साथ विवाह किया है और अपने इस्लामिक आस्तित्व को बनाये रखा है।

अतः स्पष्ट है कि नासिरा शर्मा जाति,वर्ग,संप्रदाय,भाषा या प्रांत विशेष की कथाकर नहीं है। उनका साहित्य इन सबसे परे का है जो मानवीय दर्द की दास्तान है। उन्होंने अपने साहित्य को संकुचित दायरे से निकालकर व्यापक वैश्विक धरातल पर स्थापित करके समाज के प्रति प्रतिबध्दता को निभाया है। इसिलिए उनका साहित्य यथार्थ परिवेश की सच्चाई का परिचायक है। उन्होंने अपने उपन्यासों में स्त्री विर्मश से जुडे प्रश्नों को उठाने के साथ–साथ वैश्विक स्तर पर विभिन्न समस्याओं से जूझते मानव के दुख–दर्द पीडा को बिना किसी भेदभाव के शब्दबध्द किया है। लेखिका किसी एक विचारधारा की वाहक न होकर युगीन परिवेश के वाहक के रूप में उभरकर सामने आती है। उनके प्रत्येक उपन्यास,कहानी उसका प्रत्येक पात्र समकालीन युग का परिचायक है।

संदर्भ सूची–

1. जिन्दा मुहावरे– नासिरा शर्मा,पृ.121
2. अमोख्ता–इब्ने मरियम– नासिरा शर्मा,पृ.18
3. कशीदाकारी– इब्ने मरियम– नासिरा शर्मा,पृ.100
4. सामायिक चेतना और नासिरा शर्मा वैश्वीकरण,स्त्री विमर्श,दलित चेतना–डॉ.मनीषा शर्मा